

# विदा

(खण्ड-काव्य)

उज्ज्वल नक्षत्र गगन के  
कव गिर धरती पर आते ।  
वे तम का भेदन करके  
फिर तम से हूँ छिप जाते ॥

सुधाकर

शतदल प्रकाशन

गोरखपुर